आठवां अंक
सितंबर, 2024

गोंय पोर्ट दर्पण

हिंदी गृह पत्रिका

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

हेडलैण्ड सडा-गोवा

राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त क्षेत्रीय नराकास राजभाषा सम्मान

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के संयोजन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दक्षिण गोवा को वर्ष 2022 – 2023 के दौरान 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत अपने कार्य क्षेत्र में संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रदत्त द्वितीय क्षेत्रीय नराकास सम्मान पुरस्कार।

गोंय पोर्ट दर्पण

नराकास, द.गोवा की राजभाषा शील्ड

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण को केंद्र सरकार के उपक्रमों के अंतर्गत वर्ष 2022–2023 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), द.गोवा द्वारा प्रदत्त प्रथम राजभाषा शील्ड ।

गोंय पोर्ट दर्पण

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संरक्षक

डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस,
अध्यक्ष

मार्गदर्शक

श्री. विनायक राव बी. एस., उपाध्यक्ष
कप्तान मनोज जोशी, उप संरक्षक
श्री. एम. शंकर बाबू, सचिव

संपादक

श्रीमती नीलम कंकरे
हिंदी अधिकारी

सहायक संपादक

श्रीमती रोशन कोमरपंत
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

टंकण सहयोग

श्री शिव कुमार कलबुर्गी
वरिष्ठ लिपिक

विषय–सूची

1.	संदेश	04–07
2.	संपादकीय	08
3.	राजभाषा हिंदी के सुचारू कार्यान्वयन के लिए अपेक्षित कदम	09
4.	हिंदी	10
5.	आशा ही जीवन है	10
6.	अप्रत्याशित आसमान : जलवायु परिवर्तन का तात्कालिक आह्वान	11
7.	ईश्वर और इंसान	12
8.	संघर्ष	12
9.	खरी मिसाल	12
10.	हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित उच्च स्तरीय अधिकारियों की निबंध प्रतियोगिता के विजेता	13–16
11.	भारत – ज्ञान का भंडार	16–17
12.	हमारा बगीचा: एक हरा–भरा संसार	18
13.	मुरगांव पत्तन में राजभाषाई गतिविधियां	19–24
14.	मुरगांव पत्तन में राजभाषा कार्यान्वयन की झलकियां	25–26
15.	मुरगांव पत्तन में आयोजित विभिन्न गतिविधियां – एक नजर	27–42

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से पत्तन प्राधिकरण का सहमत होना अनिवार्य नहीं है, यह लेखकों के निजी विचार हैं।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संदेश

यह मेरे लिए गर्व और संतोष का विषय है कि मुरगांव पत्तन प्राधिकरण हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है, और हिंदी ई–पत्रिका के इस अंक का विमोचन इसका सजीव प्रमाण है। हिंदी पखवाड़े के अवसर पर, हम यह पुनः स्मरण करते हैं कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, बल्कि यह हमारे संगठन के भीतर सांस्कृतिक एकता और समावेशिता को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम भी है।

हिंदी अनुभाग की यह पहल प्रशंसनीय है, जो न केवल राजभाषा नीति के सफल क्रियान्वयन में सहायक है, बल्कि हमारे कर्मचारियों को हिंदी को एक सशक्त कार्य उपकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित भी कर रही है। यह ई–पत्रिका उन सभी प्रयासों का प्रतिबिंब है जो हमारी टीम के सदस्यों ने हिंदी के प्रचार–प्रसार और आधिकारिक कार्यों में इसके प्रभावी उपयोग के लिए किए हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे कर्मचारियों के भीतर हिंदी के प्रति जागरूकता और समर्पण को और प्रोत्साहित करेगी। मैं सभी से आग्रह करता हूँ कि वे हिंदी को अपने दैनिक कार्यों में प्राथमिकता दें और इसके उपयोग को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय भाषा के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएँ। आइए, हम मिलकर राजभाषा के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एकजुट होकर आगे बढ़ें और मुरगांव पत्तन प्राधिकरण को इस क्षेत्र में अग्रणी बनाएँ।

डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस,
अध्यक्ष

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संदेश

हिंदी पखवाड़े के इस अवसर पर मुरगांव पत्तन की हिंदी ई–पत्रिका गोंय पोर्ट दर्पण का विमोचन अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। यह हमारे संगठन में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह पहल हमारे आधिकारिक भाषा के प्रचार और इसे हमारे दैनिक कार्यों में अधिक प्रभावी ढंग से एकीकृत करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

हिंदी ई–पत्रिका एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करती है, जो राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में हमारी सामूहिक प्रयासों और उपलब्धियों को उजागर करती है। यह हिंदी की महत्ता को भी दर्शाती है, जो विभिन्न विभागों के बीच बेहतर संचार और सहयोग को सक्षम बनाती है।

मैं सभी कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस पत्रिका के साथ सक्रिय रूप से जुड़ें और अपने दैनिक सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक उपयोग करें। इससे हम न केवल राजभाषा संबंधी दिशानिर्देशों का पालन करेंगे, बल्कि हमारे कार्य स्थल में एकता और समावेशिता की भावना को भी बढ़ावा देंगे।

आइए, हम हिंदी के उपयोग को समर्थन दें और राष्ट्रीय एकता और प्रभावी संचार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करें।

श्री. विनायक राव बी. एस.
उपाध्यक्ष

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संदेश

यह मेरे लिए गर्व का विषय है कि मैंने पिछले कई अंकों से मुरगांव पत्तन की गोंय पोर्ट दर्पण हिंदी ई–पत्रिका से सक्रिय रूप में जुड़कर अपनी सेवाएँ दीं। इस पत्रिका का हिस्सा बनना मेरे लिए एक बेहद मूल्यवान अनुभव रहा है, जिसने मुझे न केवल हिंदी के प्रचार–प्रसार में योगदान करने का अवसर दिया, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने में भी मेरी भूमिका को सशक्त किया।

अब जबकि मैं इस संगठन से अन्यत्र स्थानांतरित हो रहा हूँ, मेरी शुभकामनाएँ सदैव इस पत्रिका और इससे जुड़े सभी साथियों के साथ रहेंगी। यह पत्रिका आगे भी इसी जोश और उत्साह के साथ हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

आगामी अंकों के लिए मेरी शुभकामनाएँ हैं कि वे नई ऊँचाइयों को छुएं और मुरगांव पत्तन प्राधिकरण में हिंदी के उपयोग को और सशक्त बनाएं। मैं सभी को उनके निरंतर सहयोग और समर्पण के लिए धन्यवाद देता हूँ, और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका आने वाले वर्षों में और भी नई सफलताएँ हासिल करेगी।

आइए, हम हिंदी की समृद्ध परंपरा को और आगे बढ़ाएं और इसे अपनी कार्य संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनाए रखें।

कप्तान मनोज जोशी,
उप संरक्षक

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संदेश

हिंदी पखवाड़े के अवसर पर, मैं मुरगांव पत्तन के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। पत्तन द्वारा जारी की जा रही हिंदी ई–पत्रिका गोंय पोर्ट दर्पण हमारी राजभाषा के प्रचार–प्रसार की दिशा में एक सराहनीय पहल है।

मुरगांव पत्तन, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के प्रति प्रतिबद्ध है, और इस दिशा में किए गए प्रयास हमारे संवैधानिक दायित्व के प्रति हमारी निष्ठा को दर्शाते हैं। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे कर्मचारियों को अपने दैनिक आधिकारिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रेरित करने का एक प्रभावी माध्यम साबित होगी।

मैं सभी कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि वे पत्तन के सरकारी पत्राचार में हिंदी के प्रचलन को बढ़ावा देने में योगदान दें। आइए, हम सब मिलकर उत्कृष्टता की ओर बढ़ें और राजभाषा कार्यान्वयन में नए मापदंड स्थापित करें।

श्री. एम. शंकर बाबू
सचिव

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन

संपादकीय

मुरगांव पत्तन की हिंदी ई–पत्रिका गोंय पोर्ट दर्पण न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार का सशक्त माध्यम है, बल्कि यह हमारे पत्तन की विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों का दर्पण भी है। इस पत्रिका के माध्यम से पत्तन के कर्मचारी ही नहीं, बल्कि आमजन भी पत्तन प्राधिकरण की उपलब्धियों और कार्यक्रमों से परिचित होते हैं। यह पत्रिका संगठन की आधिकारिक भाषा गतिविधियों को उजागर करते हुए हिंदी को हमारे कार्यक्षेत्र में और मजबूती से स्थापित करने का प्रयास करती है।

गोंय पोर्ट दर्पण ने हमेशा ही पत्तन के कार्यों और हिंदी के महत्व को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। इसके माध्यम से हम न केवल राजभाषा नीति के तहत निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, बल्कि यह पत्रिका सभी कर्मचारियों और पाठकों के लिए एक प्रेरणा स्रोत भी है, जो उन्हें हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करती है।

मैं इस पत्रिका की सफलता के लिए सभी योगदान कर्ताओं, कर्मचारियों और पाठकों का आभार व्यक्त करती हूँ। आप सभी के सहयोग और समर्थन के बिना यह पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो पाती।

आशा है कि भविष्य में भी आप सभी इसी तरह अपना समर्थन और सहयोग प्रदान करेंगे, ताकि गोंय पोर्ट दर्पण आने वाले अंकों में भी न केवल हिंदी को प्रोत्साहित करे, बल्कि पत्तन प्राधिकरण की महत्वपूर्ण गतिविधियों और उपलब्धियों को सभी तक पहुँचाती रहे।

आइए, हम सभी मिलकर हिंदी को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहें और इस पत्रिका के माध्यम से अपने संगठन और भाषा दोनों की प्रगति में योगदान दें।

नीलम केंकरे,
हिंदी अधिकारी

राजभाषा हिंदी के सुचारू कार्यान्वयन के लिए अपेक्षित कदम

भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी का उपयोग सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने राजभाषा अधिनियम के तहत विभिन्न नियम और प्रावधान निर्धारित किए हैं। मुरगांव पत्तन, एक प्रमुख सरकारी संगठन के रूप में, हिंदी के व्यापक और सुचारू कार्यान्वयन के लिए निरंतर प्रयासरत है। राजभाषा हिंदी के सुचारू कार्यान्वयन के लिए मुरगांव पत्तन के कर्मचारियों और अधिकारियों को निम्नलिखित महत्वपूर्ण कदम उठाने चाहिए:

1. हिंदी में पत्राचार करना:

सभी कर्मचारी और अधिकारी कार्यालयीन कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का उपयोग करें। पत्राचार, नोटिंग, और फाइलिंग में हिंदी भाषा को प्राथमिकता दें।

2. हिंदी में प्रशिक्षण प्राप्त करना/ हिंदी कार्यशालाओं और सेमिनारों में भाग लेना :

जो कर्मचारी या अधिकारी हिंदी में दक्ष नहीं हैं, उन्हें नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए। इससे वे हिंदी में कार्य करने के लिए सक्षम होंगे और आत्मविश्वास के साथ हिंदी का उपयोग करेंगे। अधिकारियों और कर्मचारियों को नियमित रूप से आयोजित हिंदी कार्यशालाओं और सेमिनारों में भाग लेना चाहिए। इससे उन्हें राजभाषा के नियमों और हिंदी के महत्व की जानकारी मिलेगी, और वे कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को प्रभावी बना सकेंगे।

3. हिंदी ई-टूल्स का उपयोग:

कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों में , कंप्यूटर पर कार्य करते समय यूनिकोड प्रणाली का इस्तेमाल करना चाहिए व साथ ही राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए विविध ई टूल्स जैसे कि कंठस्थ, ई- महा शब्दकोश, आदि तथा हिंदी कार्य में सुविधा देनेवाले अन्य ई-टूल्स जैसे कि गूगल वाईस टाईपिंग, गूगल ट्रांस्लेट, स्पीच नोट, आदि का उपयोग करना चाहिए, ताकि हिंदी में टाईपिंग और दस्तावेज तैयार करना सुगम हो सके। डिजिटल माध्यमों पर हिंदी के उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

4. धारा 3 (3) का अनुपालन सुनिश्चित करना:

अधिकारियों और कर्मचारियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी सरकारी दस्तावेज, आदेश, परिपत्र आदि हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कर जारी किए जाएं। यह राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए आवश्यक है।

5. हिंदी में पत्राचार को बढ़ावा देना :

कार्यालय से बाहर जाने वाले पत्रों को अधिकाधिक रूप से द्विभाषी में जारी कर लक्ष्य से अधिक कार्य सुनिश्चित करना। छोटे प्रकार के पत्रों को अनिवार्यता द्विभाषी में ही जारी करने का प्रयास करना।

6. आपस में वार्तालाप हिंदी में करना :

कार्यालयीन माहौल में आपसी संवाद और वार्तालाप में हिंदी का उपयोग राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब अधिकारी और कर्मचारी आपस में हिंदी में संवाद करेंगे, तो हिंदी के प्रति जागरूकता और सम्मान दोनों बढ़ेगा। हिंदी में वार्तालाप से न केवल भाषा का अभ्यास होगा, बल्कि कार्यों में एकरूपता और सरलता भी आएगी। कार्यालय में भाषा की बाधा समाप्त होगी और कर्मचारियों को सहज रूप से अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलेगा, जिससे कार्यकुशलता में वृद्धि होगी।

7. हिंदी में वार्षिक रिपोर्ट और नोट्स तैयार करना :

सभी विभागाध्यक्षों और अधिकारियों को अपनी वार्षिक रिपोर्ट, कार्य विवरण, और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज हिंदी में तैयार करने की पहल करनी चाहिए। इससे हिंदी का औपचारिक उपयोग बढ़ेगा और राजभाषा नीति का पालन सुनिश्चित होगा।

8. हिंदी गतिविधियों /प्रतियोगिताओं में भाग लेना:

कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़ा, हिंदी प्रतियोगिताओं और अन्य हिंदी संबंधित आयोजनों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। इससे उनके हिंदी ज्ञान में वृद्धि होगी और कार्यों में हिंदी के प्रयोग के प्रति रुचि बढ़ेगी।

9. हिंदी साहित्य और शब्दावली का अध्ययन:

अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी साहित्य, सरकारी शब्दावली और अनुवाद संबंधी पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए, ताकि वे कार्यालयीन कार्यों में उचित शब्दों का प्रयोग कर सकें। इसके लिए राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध ई-पुस्तकालय, ई-महा शब्दकोष आदि का लाभ लिया जाए।

कर्मचारियों और अधिकारियों द्वारा इन कदमों का पालन करने से मुरगांव पत्तन में हिंदी का कार्यान्वयन अधिक प्रभावी ढंग से हो सकेगा। यह न केवल राजभाषा अधिनियम के लक्ष्यों की पूर्ति करेगा, बल्कि कार्यालय के कामकाज में सरलता और पारदर्शिता भी लाएगा।

हिंदी

हिंदी हमारी आन है, हिंदी हमारी शान है,
हिंदी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है।
हिंदी हमारी वर्तनी, हिंदी हमारा व्याकरण,
हिंदी हमारी संस्कृति, हिंदी से सजे संस्कार हैं।
हिंदी हमारी वेदना, हिंदी हमारा गान,
हिंदी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है।
हिंदी हमारी आत्मा है, भावना का साज़,
हिंदी है देश की हर कोमल तोतली आवाज़।
हिंदी हमारी अस्मिता, हिंदी हमारी पहचान,
हिंदी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है।
निराला, प्रेमचंद की लेखनी का अमर वरदान,
हिंदी में बच्चन, पंत, दिनकर का है गान।
तुलसी, सूर, मीरा, जायसी की यही शान,
हिंदी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है।
जब तक आकाश में चाँद-सूरज की बिंदी रहे,
तब तक वतन की राष्ट्रभाषा अमर हिंदी रहे।
हिंदी हमारा शब्द, स्वर, व्यंजन की पहचान,
हिंदी हमारी चेतना, वाणी का शुभ वरदान है।

आशा ही जीवन है

आशा जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। जब हम कठिनाइयों का सामना करते हैं, तब आशा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। बिना आशा के, जीवन अंधकारमय और निराशाजनक हो सकता है।

जब भी हम किसी कठिन परिस्थिति में होते हैं, हमारी आशा हमें यह विश्वास दिलाती है कि आने वाले समय में कुछ अच्छा होगा। महात्मा गांधी, भगत सिंह, और अन्य महान लोग भी अपने कठिन संघर्षों में सिर्फ इसलिए आगे बढ़ पाए, क्योंकि उन्हें आशा थी कि उनका संघर्ष एक दिन सफल होगा।

जीवन में हार और असफलताएं आती हैं, लेकिन आशा हमें बार-बार खड़ा होने की शक्ति देती है। इसलिए कहा जाता है, जहाँ चाह, वहाँ राह। अगर हमें आशा है, तो हम कठिन से कठिन समय में भी अपनी मंजिल तक पहुँच सकते हैं।

आशा वो दीपक है, जो हर दिल में जलता है,
अंधेरों में भी यह, कभी न बुझता है।
जब टूटते हैं सपने, और मन घबराता है,
तब आशा का सूरज, नयी राह दिखाता है।

हर मुश्किल का सामना, हंसकर हम करते हैं,
क्योंकि दिल में उम्मीद की किरणें भरते हैं।
आशा ही जीवन है, यह हमें सिखाती है,
कठिन राहों में भी, मंजिल दिखाती है।

तो न छोड़ो कभी तुम, अपनी आशा का साथ,
यही जीवन का सार है, यही है सही बात।

गुरुदास गावडे
सहायक सचिव ग्रेड II,
सामान्य प्रशासन विभाग

अप्रत्याशित आसमान : जलवायु परिवर्तन का तात्कालिक आह्वान

यह जुलाई 2024 का पहला सप्ताह था । आसमान में भारी बादल थे, जिससे यह संकेत मिल रहा था कि मानसून शुरू हो चुका है । हालांकि, इस साल का मानसून पिछले दशक से अलग था। जब मैं स्थानीय बस में सफर कर रहा था, तो मेरे बगल में एक बुजुर्ग व्यक्ति बैठे थे । बाहर हो रही मूसलाधार बारिश को देखकर उन्होंने कहा, मौसम अब अप्रत्याशित हो गया है । मैंने उत्सुकता वश उनसे पूछा कि आप ऐसा क्यों कह रहे हैं, इस समय ऐसा होना स्वाभाविक है। लेकिन उनका जवाब सुनकर मैं सोच में पड़ गया:
मैंने बचपन से गोवा में जीवन बिताया है । हां, यहां बारिश होती है, लेकिन अब वैसी नहीं। अब हर दूसरे दिन रेड अलर्ट जारी हो रहा है ।

वास्तव में, मौसम के पैटर्न पूरी तरह से बदल गए हैं । यह काफी अप्रत्याशित हो गया है । इसका एकमात्र उत्तर जो मेरे मन में आता है, वह है जलवायु परिवर्तन । विज्ञान हमें बताता है कि जलवायु परिवर्तन एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जो वर्षों में धीरे-धीरे होती है । लेकिन, 1800 के दशक से, मानव गतिविधियों ने इस प्रक्रिया को तेज कर दिया है । इसका कारण है, हम बहुत अधिक जीवाश्म ईंधन जैसे कोयला, तेल, और गैस जला रहे हैं, जो कार्बन डाइऑक्साइड और मिथेन जैसी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करते हैं । पेट्रोलियम-डीजल इंजन से होने वाला उत्सर्जन भी इसमें जुड़ जाता है। ये गैसें हमारी पृथ्वी के चारों ओर एक कंबल की तरह काम करती हैं, सूर्य की गर्मी को फंसाती हैं और तापमान बढ़ाती हैं ।

अब हम सोच सकते हैं कि पृथ्वी का तापमान बढ़ने से क्या फर्क पड़ता है। विशेष रूप से, पृथ्वी वर्तमान में 1800 के दशक की तुलना में 1.2 डिग्री अधिक गर्म है । यह एक महत्वपूर्ण वृद्धि है और यह वृद्धि केवल कहानी की शुरुआत है, क्योंकि पृथ्वी एक वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र है, जहां एक क्षेत्र में परिवर्तन अन्य सभी क्षेत्रों में परिवर्तन को प्रभावित कर सकते हैं।

मौसम के पैटर्न प्रभावित हो रहे हैं । हालांकि हम गोवा में भारी बारिश देख रहे हैं, लेकिन फिर भी हमारे देश के कई हिस्सों में पर्याप्त बारिश नहीं हो रही है । हम देख सकते हैं कि कुछ क्षेत्रों में अधिक बार और गंभीर बाढ़ हो रही है जबकि अन्य क्षेत्रों में गंभीर सूखा पड़ रहा है, जिससे कृषि और जल आपूर्ति प्रभावित हो रही है। जलवायु परिवर्तन तूफानों और चक्रवातों की संख्या में भी वृद्धि करता है ।
यह सब हमारी प्राकृतिक अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रहा है । गर्मियां पहले से ज्यादा गर्म हैं और सर्दियां पहले से ज्यादा ठंडी । इस विविध मौसम पैटर्न के साथ, कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है और इससे खाद्य संकट उत्पन्न हो रहा है । दूसरी तरफ नदियां सूख रही हैं, जिससे पानी की कमी हो रही है।

गर्म तापमान के कारण, हम बर्फ के पिघलने और समुद्र के स्तर में वृद्धि देख सकते हैं । इससे तटीय समुदायों को खतरा है क्योंकि उन्हें खुद को पुनर्स्थापित करना पड़ता है । भविष्य में, मौसम से संबंधित घटनाओं से विस्थापित लोगों की संख्या केवल बढ़ने की संभावना है ।

हम एक बड़ी चुनौती का सामना कर रहे हैं, लेकिन हमें कई समाधान भी पता हैं । हमें जीवाश्म ईंधनों से स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा की ओर स्वीच करने की आवश्यकता है, जो ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करेगा । पेड़ लगाना, वनावरण बढ़ाना और मौजूदा वनों की रक्षा करना उत्सर्जन को काफी हद तक कम कर सकता है । इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना, ईंधन की दक्षता में सुधार करना और सार्वजनिक परिवहन को प्रोत्साहित करना वे तरीके हैं जिनसे हम इस लड़ाई को जीत सकते हैं । ये सभी कदम किसी भी व्यक्ति द्वारा उठाए जा सकते हैं और यह लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में पहला कदम है ।

महात्मा गांधी ने कहा था, पृथ्वी हर व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त सुविधा प्रदान करती है लेकिन हर आदमी के लालच को नहीं । इस विचार के साथ, हमें खुद को सतत विकास के साथ फिर से जोड़ना चाहिए । जलवायु परिवर्तन एक दूर का खतरा नहीं है बल्कि एक तात्कालिक और व्यापक चुनौती है जिसे त्वरित और समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता है ।

जब मैं बस से उतरने वाला था, तो बुजुर्ग व्यक्ति मुस्कुराए और कहा, कृपया हर दिन अपनी छतरी ले जाना न भूलें । मैं हंसा और उन्हें अलविदा कहा, उनके शब्दों की गंभीरता और तात्कालिक कार्रवाई की आवश्यकता पर विचार करते हुए ।

विंस्टन सैमुअल राज विश्वनाथन
सुपुत्र - रोज जेबा कुमारी,
लेखाकार/वित्त विभाग

ईश्वर और इंसान

स्वर्ग में ईश्वर,
धरती पर संसार।
ईश्वर का प्रेम असीम,
इंसान बस फेम का तलबगार।

ईश्वर में क्षमा की मूरत,
इंसान में चाहतें अपार।
ईश्वर में करुणा की गहराई,
इंसान में लालच का भार।

ईश्वर की लीला अपरंपार,
इंसान का जीवन सीमित विचार।
ईश्वर के अनगिन रूप हैं प्यारे,
इंसान अपने स्वार्थ में हारे।

ईश्वर में सहनशीलता का तेज,
इंसान असहनशीलता में लिप्त।
ईश्वर ज्ञान का प्रकाश,
इंसान में अज्ञान की झलक।

ईश्वर की कला निराली,
इंसान की मेहनत है प्यारी।
ईश्वर ने संसार रचाया,
इंसान ने इसमें नाम कमाया।

संघर्ष

जीवन एक संघर्ष है,
हर कदम पर होता प्रयास।
संघर्ष से ही मिलती मंज़िल,
पाओ तुम जीवन का सुयश।

जीवन है एक डोर,
हर मोड़ पर मचता है शोर।
उतार-चढ़ाव के संग जीना,
फिर भी मन से रहो सरल और कोमल।

जीवन है बहता पानी,
समझो इसको रानी।
बहे जहाँ, गढ़े वहाँ,
निर्मलता से जीती जहाँ।

जीवन है एक खुशी,
बनो जैसे देशी।
सादगी में है सौंदर्य छिपा,
जिससे मिले दिल को संतुष्टि।

जीवन में है सुंदरता,
जो लाए मन को सफलता।
हर छोटी खुशी का आलिंगन करो,
यही है असली समृद्धता।

एकता जीवन का आधार,
जिससे बनता अखंड संसार।
समानता का हाथ पकड़ो,
हर मन को खुलकर आगे बढ़ो।

जीवन है शक्ति का प्रतीक,
हर युक्ति में समाई है जीत।
हौसले से तुम चलो,
नए सपनों को हर रोज़ गढ़ो।

जीवन के रंग हैं अनेक,
देते हैं दिल को उमंग।
रंगों से भर लो ये सफर,
हर क्षण हो उज्ज्वल और बेहतरीन।

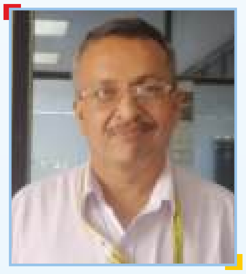

श्री संजय वि. चोडणकर
सहा. का. अभियंता (यांत्रिक)
वित्त विभाग / एम.पी. ए .

खरी मिसाल

ऐ राह के मुसाफिर, क्यों कर रहा हैं मलाल,
आया था क्या लेके तू , जो होना हैं तुझे मालामाल,
ख्वाहिशें तेरी बेशक अनगिनत सही,
पर दिल को भी सिखा थोड़ा सुकून और ख़याल।

अपनों के संग, परायों का भी रख ले ध्यान,
जीवन का हर लम्हा बना ले तू महान।
हर पल में है ख़ुशी, ढूँढ तू उसका कमाल,
भाग्य है साथ तेरे, कर गुजर कुछ धमाल।

जिये या न जिये, तेरा होगा जयजयकार,
तेरे काम की गूँज होगी सालों-साल।
याद रख, मानव जीवन है सबसे बेमिसाल,
कर वो काम, बन जाए तू खुद एक खरी मिसाल।

श्री गिरीष र. कोलमकर
सहायक अभियंता (यांत्रिक)
इंजीनियरी यांत्रिक विभाग, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित उच्च स्तरीय अधिकारियों की निबंध प्रतियोगिता के विजेता

प्रथम पुरस्कार — मुरगांव पत्तन के लिए मेरा सपना

गुरुप्रसाद राय

पूर्व उपाध्यक्ष (सेवा निवृत्त), मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

मुरगांव पत्तन पिछले 138 वर्षों से अस्तित्व में है। यह गोवा में छोटी पुर्तगाली कालोनी के लिए प्रवेश द्वार था और इसने पश्चिमी भारतीय पुर्तगाली गारंटी कृत रेलवे कंपनी के माध्यम से गोवा से परे कनेक्टिविटी स्थापित की है। विश्व वाणिज्यिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है और एक्जिम व्यापार में लगातार बदलते परिदृश्यों से निपटने की जरूरत है। आज के परिदृश्य में वैश्विक पर्यावरण संरक्षण, ईंधन, ऊर्जा संरक्षण आदि पर बहुत जोर दिया जा रहा है।
दुनिया भर में सरकारी स्वामित्व वाले व्यवसाय की अवधारणा तेजी से कम हो रही है, वर्तमान अवधारणा यह है कि सरकार के पास व्यापार करने के लिए कोई व्यवसाय नहीं है और इरादा यह है कि सरकारी अधिकारियों / नियामक निकायों के ज्यादा हस्तक्षेप के बिना उद्यमियों को व्यवसाय स्थापित करने के लिए खुली छूट दी जाए। इस अवधारणा में देश के प्रमुख पत्तन लगातार बढ़ते निजी क्षेत्र के पत्तनों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए लैंडलॉर्ड मॉडल की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसी प्रतिस्पर्धा से निपटने के लिए, उद्यमियों को निवेश के लिए आकर्षित करने और लंबे समय तक उनकी सफलता और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए अधिकतम आधुनिक सुविधा / प्रौद्योगिकी प्रदान / स्थापित करने की आवश्यकता है।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) भारत के समुद्री अवसंरचना में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जो व्यापार और वाणिज्य के लिए एक महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है। जैसे-जैसे हम तेजी से तकनीकी प्रगति कर रहे है और विकसित हो रहे है वैश्विक व्यापार गतिशीलता के युग में कदम रख रहे हैं, एमपीए के लिए एक दूरदर्शी दृष्टिकोण तैयार करना अनिवार्य हो जाता है। मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के लिए मेरी दृष्टि में नवाचार, स्थिरता, दक्षता और सामुदायिक विकास शामिल है, जिसका लक्ष्य पत्तन को प्रगति के प्रतीक में बदलना है।
इस दृष्टिकोण को साकार करने के पहले कदम में पत्तन की अवसंरचना का व्यापक पुन :निर्माण करना शामिल है। स्मार्ट सेंसर, ऑटोमेशन और डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाने से परिचालन दक्षता बढ़ सकती है, टर्न अराउंड समय कम हो सकता है और मानवीय त्रुटियां कम हो सकती हैं। बर्थ, गोदामों और कार्गो-हैंडलिंग उपकरणों को अपग्रेड करने से निर्बाध व्यापार संचालन को बढ़ावा मिलेगा और एमपीए को एक आधुनिक समुद्री केंद्र के रूप में स्थान मिलेगा।

आज की दुनिया में पर्यावरणीय जिम्मेदारी सर्वोपरि है। मेरी कल्पना है कि एमपीए स्थिर पत्तन प्रबंधन का मार्ग प्रशस्त करेगा। जहाजों के लिए तटीय बिजली, अपशिष्ट पुनर्चक्रण और कुशल ऊर्जा खपत जैसी हरित प्रथाओं को लागू करने से पत्तन के कार्बन फुट प्रिंट को काफी कम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पत्तन के आसपास के नाजुक तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए कड़े पर्यावरणीय नियमों को बरकरार रखा जाना चाहिए।

जानकारी पूर्ण निर्णय लेने के लिए डेटा की शक्ति का उपयोग करना आवश्यक है। एक केंद्रीय डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म जहाज की गतिविधियों, कार्गो हैंडलिंग और पत्तन प्रचालन में वास्तविक समय की जानकारी प्रदान कर सकता है। यह डेटा संचालित दृष्टिकोण सक्रिय निर्णय लेने, संसाधन आबंटन को अनुकूलित करने और समग्र पत्तन प्रबंधन को बढ़ाने में सक्षम रहेगा । अपनी मूल शक्तियों को बनाए रखते हुए, एमपीए को अपने व्यापार पोर्ट फोलियो में विविधता लाने के अवसर तलाशने चाहिए। पड़ोसी क्षेत्रों, उद्योगों और अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों के साथ सहयोग करके कार्गो और राजस्व के लिए नए रास्ते बनाए जा सकते हैं। सड़क, रेल और हवाई नेटवर्क के माध्यम से कुशल कनेक्टिविटी स्थापित करने से पत्तन की पहुंच बढ़ेगी और व्यापार भागीदारों के व्यापक स्पेक्ट्रम को आकर्षित किया जा सकेगा ।

एक सफल पत्तन अपने समुदाय से अलग-थलग नहीं रह सकता। मैं कल्पना करता हूँ कि एमपीए आसपास की आबादी के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों में निवेश करके स्थानीय विकास में सक्रिय भूमिका निभाए । समुद्री उद्योगों से संबंधित कौशल प्रदान करके पत्तन स्थानीय रोजगार में योगदान दे सकता है और जीवन स्तर में सुधार ला सकता है।

कार्गो और कर्मियों दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित करना समझौता योग्य नहीं है। एमपीए के लिए मेरे दृष्टिकोण में अत्याधुनिक सुरक्षा उपाय शामिल हैं, जिनमें उन्नत निगरानी प्रणाली, साइबर सुरक्षा प्रोटोकॉल और सुव्यवस्थित आपातकालिन प्रतिक्रिया योजनाएं शामिल हैं। हित धारकों के बीच विश्वास कायम करने के लिए एक सुरक्षित पत्तन वातावरण महत्वपूर्ण है।

अंत में, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के लिए मेरा दृष्टिकोण नवाचार, स्थिरता, दक्षता और सामुदायिक जुड़ाव को अपनाने के इर्द-गिर्द घूमता है। अवसंरचना का आधुनिकरण करके, टिकाऊ प्रथाओं को अपनाकर, डेटा का उपयोग करके, व्यापार में विविधता लाकर, कौशल विकास को बढ़ावा देकर और सुरक्षा को प्राथमिकता देकर, एमपीए एक विश्व स्तरीय पत्तन के रूप में विकसित हो सकता है जो समुद्री उत्कृष्टता के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करें । यह दृष्टिकोण न केवल पत्तन को लाभ पहुंचाता है बल्कि क्षेत्र और पूरे देश की समग्र आर्थिक वृद्धि और विकास में भी योगदान देता है।

द्वितीय पुरस्कार मुरगांव पत्तन के लिए मेरा सपना

कप्तान हिमांशु शेखर
यातायात प्रबंधक, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

मुरगांव पत्तन की स्थापना 1885 में पुर्तगालियों द्वारा गोवा के अपने भारतीय औपनिवेशक एन्क्लेव के लिए एक प्रवेश द्वार पत्तन के रूप में की गई थी। अपनी स्थापना के बाद से पत्तन प्रौद्योगिकी और आधुनिक कार्गो हैंडलिंग सिस्टम को अपनाने में अग्रणी था। यह रेलवे और अंतर्देशीय जलमार्ग से जुड़े होने वाले पहले पत्तनों में से एक था।

समय के चलते यह पत्तन वर्ष 2010-11 में 50 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक कार्गो की संभलाई कर अपने शिखर को प्राप्त करने के लिए मजबूती से आगे बढ़ा है। तब से 2012 में लौह अयस्क के खनन और निर्यात पर भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा लगाए गए प्रतिबंध के कारण पत्तन कठिन समय से गुजर रहा है। उपर्युक्त के कारण पत्तन को वित्तीय रूप से चुनौती पूर्ण समय से गुजरना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप लौह अयस्क के कार्गो में काफी कमी आई और पत्तन राजस्व में संबंधित हानि हुई।

पत्तन को तब अपने कार्गो मिश्रण में विविधता लाने और अपनी दक्षता बढ़ाने हेतु बदलती परिस्थितियों को अपनाना पड़ा। हाल ही में पत्तन ने अपनी कार्गो हैंडलिंग क्षमता को बढ़ाने, कनेक्टिविटी बढ़ाने और कार्गो वस्तुओं में विविधता लाने के लिए एक महत्वाकांक्षी आधुनिकरण अभियान शुरू किया है।

हर युग में पत्तन का नेतृत्व समर्थ एवं सक्षम व्यक्तित्वों द्वारा किया गया था जो पत्तन के आधुनिकरण के लिए उत्सुक थे । अंत में आज ऊपर उल्लिखित सभी प्रयासों के साथ और पत्तन को हरा-भरा करने और कार्बन फुट प्रिंट को कम करने के साथ-साथ इज ऑफ मेकिंग बिजनेस पर ध्यान केंद्रित कर, हम कह सकते हैं कि यह पत्तन सुधार के रास्ते पर है। ऐसा करने से पत्तन न केवल गोवा, वह राज्य जहां यह स्थित है, की पर्यावरण के अनुकूल प्रकृति के प्रति जागरूक होगा बल्कि गोवा के सुंदर लोगों के सक्रिय सहयोग से भी ऐसा करेगा।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि आधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाने और नवाचार को अपनाने से, यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है कि हमारे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना उच्च कार्गो थ्रूपुट और दक्षता आसानी से प्राप्त की जा सकती है। यह एक शून्य राशि का खेल नहीं है और दोनों, यानी एक्जिम व्यापार बढ़ाने और मानव गतिविधि के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने की इच्छा को पूरा करने के लिए पर्याप्त जगह है । मेरी दृष्टि है कि बहुत जल्द यह पत्तन यूरोप के सर्वश्रेष्ठ पत्तनों के बराबर होगा। समय आ गया है कि हम छोटे वृद्धिशील सुधार का लक्ष्य रखना बंद कर दें और विश्व में सर्वश्रेष्ठ हासिल करने के लिए बड़े बदलावों के लिए छलांग लगाएं।

मुरगांव पत्तन 2047 तक एक विकसित भारत बनाने में अपना योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है । यद्यपि स्थानीय भूगोल और भीतरी इलाकों की कनेक्टिविटी के संदर्भ में कुछ अंतर्निहित चुनौतियां हैं, लेकिन प्राप्त करने योग्य मैट्रिक्स के संदर्भ में मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के लिए मेरे विचार निम्नवत है। आज नीति और अवसंरचना में जो बदलाव किए जा रहे हैं, वे यह सुनिश्चित करेंगे कि वर्ष 2047 तक मुरगांव पत्तन प्राधिकरण गोवा निम्नलिखित मापदंडों को हासिल कर लेगा:

1. प्रति मैट्रिक टन कार्गो संचालन में ऊर्जा खपत के मामले में यह अपनी श्रेणी में दुनिया का सबसे कुशल पत्तन ।
2. प्रति मैट्रिक टन कार्गो के कार्बन फुटप्रिंट के मामले में अपनी श्रेणी में दुनिया का सबसे पर्यावरण अनुकूल पत्तन ।
3. प्रति टन कार्गो की औसत हैंडलिंग लागत के मामले में, अपनी श्रेणी में भारत के सबसे किफायती पत्तनों में से एक।

नोट: अपनी श्रेणी में इसका अर्थ है कि एक मल्टी कमोडिटी पोर्ट, जिसमें 65 मिलियन मैट्रिक टन से कम की स्थापित क्षमता के साथ 10 से कम बर्थ हैं।

तृतीय पुरस्कार — मुरगांव पत्तन के लिए मेरा सपना

रमेश स. शेट
अधीक्षण अभियंता (यांत्रिक) (सेवा निवृत्त), यांत्रिक इंजीनियरी विभाग

मेरा गोवा प्रकृति की गोद में बसा हुआ एक छोटा सा राज्य हैं। लेकिन छोटे होने के बावजूद भी भगवान ने इस राज्य पर सृष्टि सौन्दर्य उत्पन्न कर उपकार कर दिया है। इस खूबसूरत गोवा में पश्चिम तट पर बसा एक बंदरगाह है, जिसका नाम है मुरगांव पत्तन प्राधिकरण जिसे पहले मुरगांव पत्तन न्यास' कहा जाता था। इस पत्तन ने गोवा राज्य के विकास के साथ-साथ अपने कर्मचारियों और पत्तन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े लोगों / उद्योगों के जीवन स्तर में सुधार में योगदान दिया है।

इस पत्तन में एक जमाने में हजारों कर्मचारी काम करते थे, लेकिन, अभी कर्मचारियों की संख्या केवल एक हजार तक ही है। मैं भी उनमें से एक हूँ। मुझे लगता है कि सभी के मन में अपने पतन का एक रूप होगा जो अत्यन्त भव्य ,गौरवशाली और उन्नत होगा। यदि उसका पत्तन किसी कारण से अपने गर्व से न्यून हो गया है तो वह एक सपना देखता है और अपने उस सपने के अनुरूप पत्तन के बनने की आकांक्षा करता है।

एक समय था जब मुरगांव पत्तन उन्नति और प्रगति के शिखर पर संवार हुआ था। वह काल 1986-2016 सदी का था , जब पत्तन में भारी मात्रा में लौह -अयस्क की निर्यात यांत्रिक अयस्क हैडलिंग संयंत्र (एमओएचपी) द्वारा होती थी। उस समय देश - विदेश से बड़े-बड़े जहाज बंदरगाह पर दिखते थे । अब इन जहाजों की संख्या बहुत कम हुई है। जब सुप्रिम कोर्ट ने गोवा में खनन पर प्रतिबंध लगाया तब से पत्तन की स्थिति बिघड़ने लगी और उसकी उन्नति में गिरावट आने लगी । उस समय पूरा कर्मचारी वर्ग घबरा गया था कि उनको महीने की तनख्वाह मिलेंगी या नहीं । लेकिन उस दौर से पत्तन सही सलामत बाहर आ गया और धीरे-धीरे उन्नति की ओर चलने लगा। आज यद्यपि मेरा पत्तन आर्थिक उन्नति में आगे बढ़ रहा है यह दृश्य देखकर मैं एक सपने में खो जाता हूँ और चाहता हूँ कि जैसा मेरा पत्तन के लिए सपना है, क्या मेरा पत्तन भी इसी प्रकार का बन पाएगा? क्या मेरा सपना साकार होगा? नैतिक दृष्टि से पत्तन प्रगतिशील और समुन्नति पत्तन होगा?

मेरे पत्तन को अपने कर्मचारियों के कल्याण को प्राथमिकता देनी चाहिए। कार्य जीवन संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाला लचीला कार्य वातावरण होना चाहिए। पत्तन को सभी के लिए एक सुरक्षित और सम्मानजनक कार्य स्थल सुनिश्चित करना चाहिए। नियमित प्रशिक्षण और विकासात्मक कार्यक्रम जिससे कर्मचारियों के कौशल और करियर को बढ़ावा मिले। पत्तन की कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पहल को इसके मूल्य और मिशन के अनुरूप होना चाहिए। इस को मल्टी कामोडिटी व्यवसाय में विविधता लानी हैं ताकि भविष्य में यदि एक या अधिक कमोडिटी के व्यवसाय में नुकसान की स्थिति में पत्तन के व्यवसाय/ राजस्व सृजन पर प्रभाव न पड़ें ।

पत्तन को अधिक गैर-प्रदुषणकारी कार्गो को संभालना चाहिए, जिससे पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव पड़ें । मेरा पत्तन स्थिरता का प्रतीक होना चाहिए। इसमें कार्बन फुट प्रिंट को कम करने के लिए सौर पैनल, पवन टरबाइन और हरित प्रौद्योगिकी और ऊर्जा कुशल इमारतों जैसी प्रौद्योगिकी को शामिल किया जाना चाहिए। पत्तन में डीजल पर चलने वाले सभी यंत्र और परिवहन को स्वच्छ ऊर्जा द्वारा संचालित किया जाना चाहिए और हरित स्थान प्रचुर मात्रा में होना चाहिए जो कर्मचारियों और लोगों को स्वस्थ और प्रदूषण मुक्त रहने वाला वातावरण प्रदान करें।

प्रौद्योगिकी में पत्तन केंद्र स्थान में रहना चाहिए। यह पत्तन को उन्नत बुनियादी ढ़ाँचा प्रदान करेगी, जो इसे उत्पादकता में सुधार के लिए डेटा और डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करेगी। हिंदुस्थान के नक्शे पर गोवा एक पर्यटन प्रदेश के नाम से विख्यात हो चुका है पत्तन को इसका उपयोग पत्तन में पर्यटक को आकर्षित करने के लिए उठाना चाहिए। सडा का किल्ला सड़ा जंक्शन का पायलट फाइट, हार्बर ब्रेक वाटर पर पुराना लाइट हाऊस, जपानीस गार्डन इन सभी को विकसित कराना चाहिए। पत्तन के इतिहास से संबंधित प्राचीन वस्तुओं को प्रदर्शित करने के लिए संग्रहालय की स्थापना की जानी चाहिए । पत्तन में क्रूज टर्मिनल के विकास की वर्तमान परियोजना से पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी जिससे गोवा के लोगों को लाभ मिलेगा।

तकनीकी उन्नति के साथ पत्तन का विकास, पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए जो समृद्धि की ओर ले जाने वाला है, जिसमें संतोषजनक कर्मचारी होंगे और जिसका गोवा के लोगों का समर्थन प्राप्त होगा वही मेरा पत्तन के लिए सपना होगा। मैं सोच रहा हूं कि क्या कभी मेरा यह सपना पूरा होगा? क्या कभी मैं अपनी इस अभिलाषा को पूर्ण होते देख लूंगा ।

सांत्वना पुरस्कार — मुरगांव पत्तन के लिए मेरा सपना

कप्तान मनोज जोशी
उप संरक्षक, समुद्री विभाग

राष्ट्रपति कलाम ने कहा था
''सपने वे नहीं जो नींद में आते हैं, सपने वे है जो नींद नहीं आने देते।'' किसी भी संस्था की उन्नति उसके कर्मचारियों के योगदान से होती है। कर्मचारी का योगदान उसकी कर्मठता के द्वारा होता है। इस कर्मठता को एक दिशा देना आवश्यक है । इस दिशा को प्राप्त करने के लिए चिंतन आवश्यक है। इसी चिंतन को हम सपने का नाम दे सकते हैं। बताया जाता है कि दशक पहले मुरगांव पत्तन प्राधिकरण जो तब मुरगांव पत्तन न्यास के नाम से जाना जाता था एक प्रगतिशील व प्रदेश की सबसे बड़ी व्यावसायिक इकाई थी, जहां पर दस हजार से भी ज्यादा कर्मचारी काम करते थे । अनेक विपरीत परिस्थितियां आई जिन पर कर्मचारियों का नियंत्रण नहीं था, शनैः शनैः मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के क्रियाकलापों में अप्रत्याशित कमी आ गई।

मुरगांव पत्तन के लिए मेरा सपना यह है कि यह संस्थान पुनः ऊंचाइयों को छुएं और अपने गौरवशाली इतिहास को दोहराएं । इस सपने को साकार करने के लिए संस्थान को दूरगामी सोच अपनानी होगी। बदलते परिवेश में आने वाली सभी बाधाओं को प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सुलझाना होगा। यातायात की दुनिया में आई क्रांति को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता ।संस्था को अपनी कार्य पद्धति में बदलाव लाना आवश्यक है। गर्व से शिखर तक चढ़ाई करने में फिसलन अवश्य होगी, परंतु अपनी सुदृढ़ सोच, न टूटने वाले प्रण और जुझारू व्यक्तित्व से हम यह मुकाम अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

गोवा राज्य अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विश्व विख्यात है। इसके पर्यावरण की विविधता को ध्यान में रखते हुए ही साफ एवं प्रदूषण रहित क्रियाकलापों को ही प्राथमिकता देनी होगी, और यह भी सुनिश्चित करना होगा कि ऊर्जा उत्पादन एवं व्यय के क्षेत्र में आए भीषण बदलावों को पत्तन अमल में लाए, जिससे हम व्यावसायिक प्रगति के साथ- साथ पर्यावरण भी सुरक्षित रख सके व गोवा के लोगों को आजीविका देने के साथ-साथ उनके अच्छे स्वास्थ्य में भी सहयोगी बन सके, और मुरगांव पत्तन का नाम पुनः एक बार देश के अग्रणी पत्तनों में शामिल हो सकें ।

भारत - ज्ञान का भंडार

श्री गजेश आर. एस. तळावलीकर
सहा. कार्यकारी अभियंता (एम), यांत्रिक इंजीनियरी विभाग

प्राचीन काल से हमारा देश भारत दुनिया के लिए ज्ञान का भंडार है। यह भूमि महान ऋषि-मुनियों की तपस्या और साधना का परिणाम है, जिन्होंने समय से पूर्व ही ब्रह्मांड के रहस्यों को उद्घाटित किया। उन्हें न केवल सौर मंडल और तारों की जानकारी थी, बल्कि सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण के समय का भी पूर्वानुमान करने की क्षमता थी। महर्षि सुश्रुत, जिन्हें 'शल्य चिकित्सा का जनक' माना जाता है, ने मानव शरीर पर शल्य चिकित्सा की विधियों का आविष्कार किया, जो आज भी चिकित्सा क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण आधार हैं। नागार्जुन ने रसायन शास्त्र की नींव रखी, जिससे विज्ञान की यह शाखा फली-फूली। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली की बात करें, तो दुनिया का पहला आवासीय विश्वविद्यालय यहीं स्थापित हुआ। नालंदा को तक्षशिला के बाद दुनिया का दूसरा सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय माना जाता है। सम्राट कुमारगुप्त प्रथम ने 450 ई. में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। एक समय यह विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय था। यह कला का एक अद्भुत नमूना है। भारत के कॉलेज और विश्वविद्यालय आज भले ही विश्व के टॉप शैक्षणिक संस्थापनों में शामिल न हो लेकिन एक समय ऐसा भी था जब भारत विश्व का प्रमुख शिक्षा केंद्र था। इस विश्वविद्यालय में पड़ोसी देशों के विद्यार्थी पढ़ाई के लिए आते थे। इस विश्वविद्यालय में 10,000 विद्यार्थी पढ़ते थे और उनको पढ़ाने के लिए 2500 शिक्षक थे। सन 1193 में बख्तियार सिलजी ने इसे नेसनाबूत कर दिया। इस विश्वविद्यालय को आग लगा दी गई।

उस समय नालंदा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में इतनी किताबें थी कि कई सप्ताह तक आग नहीं बुझ पाई। इस आक्रमण में यहां कार्य करने वाले कई धर्माचार्य और बौद्ध भिक्षुओं को भी मार डाला गया था। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय का पूरा परिसर एक विशाल दीवार से घिरा हुआ था,

जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। उत्तर से दक्षिण की ओर मठों की कतार थी और उनके सामने अनेक भव्य स्तूप और मंदिर थे। नालंदा विश्वविद्यालय की दीवारों के अवशेष आज भी इतनी चौड़ी है कि इनके उपर ट्रक भी चलाया जा सकता है। इस विश्वविद्यालय में 300 कमरे, 7 बड़े कक्ष और अध्ययन के लिए 9 मंजिला एक विशाल पुस्तकालय था। उसमें एक समय 3 लाख से भी अधिक किताबें मौजूद थी। यह विश्वविद्यालय 800 साल तक अस्तित्व में रहा। नालंदा में छात्रों को लिटरेचर, एस्ट्रोलॉजी साइकोलोजी, लॉ एस्टोनोमी, विज्ञान, वारफेयर, इतिहास, गणित, आर्किटेक्चर , भाषाएं , इकोनोमिक्स, चिकित्सा जैसे विषयों को पढ़ाया जाता था। भारत में कई महान वैज्ञानिकों ने जन्म लिया। उनमें से कई चुने हुए वैज्ञानिकों और गणितज्ञों का परिचय नीचे दिया गया है।

1) आर्यभट – प्राचीन भारत के एक महान ज्योतिष विद्वान और गणितज्ञ थे। उन्होंने बीजगणितीय पहचान, त्रिकोणमितीय कार्य, पाई का मान, स्थान मूल्य प्रणाली जैसी कई खोजे की। उन्होंने पाई के लिए सन्निकटन पर 3.1416 तक काम किया । आर्यभट ने अपनी पुस्तक में सौर और चन्द्र ग्रहणों के बारे में भी बताया। उन्होंने दुनिया को पहली बार शून्य (0) संख्या की जानकारी दी। आर्यभट ने आज से करीब 1500 वर्ष पूर्व यह ज्ञात कर लिया था कि पृथ्वी अपनी धुरी में घुमती है और सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। उन्होंने बताया था कि पृथ्वी सभी दिशाओं में वृत्ताकार तथा अण्डाकार है। उन्होंने पृथ्वी की परिधि की भी गणना की जो वर्तमान में आधुनिक उपकरणों से नापी गई परिधि से मात्र एक प्रतिशत कम हैं। उन्होंने इसे उस कालखण्ड में प्रचलित 'योजन' पैमाने से नापा था। आर्यभट के समकालीन वराहामिहिर और उनके बाद के गणितज्ञ बह्मगुप्त और भास्कर प्रथम ने उनके ग्रंथो की व्याख्या करते हुए माना कि आर्यभट्ट ने अपने सिद्धांत प्राचीन 'सूर्य सिद्धांत ' ग्रंथ के आधार पर प्रतिपादित किए थे।

2) सी. वी. रमण– सर चंद्रशेखर वेंकट रमण एक भौतिक विज्ञानी थे । प्रकाश प्रकीर्णन में उन्होंने अभूतपूर्व कार्य किया है। उन्होंने रमण प्रभाव की खोज की है, जिसके लिए उन्हें 1930 में भौतिकी में नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने प्रकाशिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया । विज्ञान में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले वह पहले एशियाई थे।

3) सतेंद्रनाथ बोस – एक सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी थे। उनके काम ने कौंटम सांख्यिकी के क्षेत्र की नींव रखी और मौलिक कणों की हमारी समझ में योगदान दिया। बोस – आईस्टीन सांख्यिकी और बोस आईस्टीन कंडेनसेट की अवधारणा को विकसित करने में उन्होंने अल्बर्ट आईस्टीन के साथ कार्य किया।

4) जगदीश चंद्र बोस – उन्होंने भौतिकी, जीव विज्ञान और पुरातत्व सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने रेडियो और माइक्रोवेव ऑप्टिक्स की जांच में कार्य किया है। उनके काम ने वायरलेस संचार के विकास की नींव रखी। उन्हें आधुनिक भारतीय विज्ञान का जनक माना जाता है।

5) श्रीनिवास रामानुजन– एक स्वयं से सीखे गणितज्ञ थे जिनके संख्या सिद्धांत, अनंत श्रृंखला और निरंतर कार्य ने गणित के क्षेत्र में क्रांति लाई। कई चुनौतियों का सामना करने के बाद उनकी प्रतिभा को जी एच हार्डी जैसे गणितज्ञों ने पहचाना और वह 20 वीं सदी के सबसे प्रसिद्ध गणितज्ञों में से एक बन गए।

6) होमी जहांगीर भाभा – एक परमाणु भौतिक विज्ञानी थे। उन्होंने भारत के परमाणु कार्यक्रम के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । उन्हें भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक के रूप में जाना जाता है उन्होंने टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च और परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठान, ट्रॉम्बे सहित कई शोध संस्थानों की स्थापना की और कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज भी भारत ने विज्ञान और चिकित्सा में बहुत आविष्कार किए हैं। भारत में गंभीर बीमारियों का इलाज संभव है। हमने चेचक, हैजा, येल्लो फीवर, पोलीओ जैसी बीमारियों पर विजय पा ली है। भारत में कैंसर और एड्स का भी इलाज कम खर्च मे हो रहा है। कोरोना के समय भारत ने स्वदेशी टिके की निर्माण की और इसे पूरी दुनिया में पहुंचाई । भारत का मेडिकल टूरिज्म सेक्टर 18 फीसदी की वार्षिक वृद्धि कर रहा है।अन्य देशों की अपेक्षा भारत में इलाज 65 फीसदी सस्ता और क्वालिटी ट्रीटमेंट दिया जाता है। भारत के वैज्ञानिकों ने संचार के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित किए है। बात ऑप्टिकल फायबर की हो, वाईफाई अथवा 5जी की या फिर सुपर कंप्यूटर, क्वांटम कम्प्यूटिंग की। आज सूचना–संचार से भारत ई–प्रशासन, डिजिटल ईकोनॉमी, ई– लर्निंग, मौसम पूर्वानुमान में अव्वल है। भारत का आईटी सेक्टर दुनिया को राह दिखा रहा है।

हमारे देश के वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष में काफी प्रगति की है। भारत एशिया का पहला ऐसा देश है जिसने मंगल ग्रह की कक्षा में पहुंचने में सफलता प्राप्त की है। भारत ने दुनिया के लगभग 70 देशों के उपग्रहों को लाँच किया है। भारत के पास पीएसएलवी और जीएसएलवी जैसे अत्यंत सफल प्रक्षेपण यान है। भारत ने उपग्रह को चंद्रमा के ध्रुवीय कक्ष में स्थापित करने का कीर्तिमान कायम किया है। भारत ने रोहिणी, एप्पल जैसे उपग्रहों को स्थापित किया है। भारत के अंतरिक्ष प्रोग्रामों की प्राथमिकता देश को विकसित करना और आत्मनिर्भर बनाना है। दुनिया के अंतरिक्ष वैज्ञानिक कल्पना चावला और सुनिता विल्यमसन भारतीय मूल के है।

भारत को इन्हीं उपलब्धियों के कारण आज दुनिया भर में आदर के साथ देखा जाता है और यह हमारे लिए गौरव की बात है।

हमारा बगीचा: एक हरा-भरा संसार

श्रीमती सुहासिनी नाईक
कार्यालय अधीक्षक, सिविल इंजीनियरी विभाग

हमारे घर के पास ही एक सुंदर और सजीव बगीचा है, जो हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। यह बगीचा हमारे दिल के बेहद करीब है, क्योंकि इसमें हमनें न सिर्फ पौधे उगाए हैं, बल्कि इसके साथ हमारी भावनाएं, हमारा प्यार और हमारी मेहनत भी जुड़ी हुई हैं। हम अक्सर नए-नए पौधे लाकर बगीचे में लगाते हैं, जिससे इसकी सुंदरता और समृद्धि बढ़ती जाती है। बगीचे में फैले रंग–बिरंगे फूलों का खिलना मानो हमारे जीवन में खुशियों के रंग भर देता है। यहाँ गुड़हल, गुलाब, मोगरा, अबोली, चमेली, ब्रह्मकमल, जाई, जूही और अनंत के फूल अपनी मादक खुशबू से वातावरण को महकाते रहते हैं।

हमने बगीचे में केवल फूलों को ही नहीं, बल्कि फलदार पेड़ भी लगाए हैं। आम, अमरूद, अनार, काजू, केले, नारियल और सहजन के पेड़ों से न सिर्फ ताजगी भरे फल मिलते हैं, बल्कि हरियाली का एक अद्वितीय अनुभव भी होता है। औषधीय गुणों से भरपूर तुलसी, एलोवेरा, अदरक, नीम और कड़ी पत्ता जैसे पौधे भी बगीचे को और उपयोगी बना देते हैं। पान के पत्ते, हल्दी, सुपारी, सीताफल, पपीता, और अनानास जैसे अनमोल पेड़–पौधे हमारे बगीचे की विविधता और उपयोगिता को और बढ़ाते हैं।हमारा बगीचा बिल्कुल हरा–भरा रहता है। हम पौधों को नियमित पानी देते हैं, खाद देते हैं बगीचे की सफाई करते है। हमारा बगीचा इतना सुंदर और रमणीय है कि अनेक पक्षी हमारे बगीचों को भेंट देते हैं। घौसलें भी बनाते है। बगीचा कई पक्षियों का अधिवास भी है। अनेक रंग की तितलियाँ, भँवरे, मधुमक्खियां भी हमारे बगीचे की सैर लगाते है। गिलहरी भी फलों का आस्वाद लेती है।

हमारे बगीचे की एक और खासियत है कि इससे हमारे घर के आस–पास की हवा हमेशा शुद्ध और ताजगी से भरी रहती है। यह बगीचा न केवल हमारा तनाव कम करता है बल्कि हमें प्रकृति के करीब लाकर मन की शांति भी देता है। बागवानी को एक प्रकार की थेरेपी माना जाता है, जो हमारे शरीर के खुशी के हार्मोन को बढ़ाने में मदद करती है। जब हम अपने बगीचे में समय बिताते हैं, तो यह अनुभव हमें असीम संतुष्टि और आनंद से भर देता है।

हमारा बगीचा हमारे घर का एक अभिन्न अंग है। हमने उसे सुशोभित किया है। इस छोटे से बगीचे से हमारे हाथ से प्रकृति के लिए हमारी एक छोटी सी सेवा देते है, प्रदूषण कम होता है। घर की खूबसूरती भी बढ़ती है।

हमारे बगीचे से हमें ताजे फल, सब्जियां और फूल मिलते हैं, जिनका हम उपयोग पूजा, प्रसाद और भोजन में करते हैं। पड़ोसी भी हमारे बगीचे के फूलों और फलों का आनंद लेते हैं। हम फल–फूल और पौधों की टहनियां अपने मित्रों और पड़ोसियों में बाँटते हैं, और वे बदले में हमें अपने बगीचे से पौधे और टहनियां देते हैं। इस आदान–प्रदान से न केवल हमारा बगीचा समृद्ध होता है, बल्कि पड़ोस में आपसी संबंध भी मजबूत होते हैं।

कई तरह के पक्षियों की चहचहाट हमारे बगीचे से सुनाई देती है। जैसे की गौरय्या , तोता, मैना, नीलकंठ, कई कबार कोकीला भी अपना सुमधूर गाना सुनाती है। इस बगीचे ने हमारे जीवन में न केवल हरियाली और सुंदरता लाई है, बल्कि एक आंतरिक शांति और समाधान भी प्रदान किया है। हम वास्तव में अपने इस छोटे से हरे–भरे संसार से बेहद खुश हैं और इसे सहेजने का हर संभव प्रयास करते हैं।

मुरगांव पत्तन में राजभाषाई गतिविधियां

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण में हिंदी पखवाड़ा समारोह, 2023 का आयोजन

दि. 14 सितंबर, 1949 को हिंदी भाषा को हमारे देश की आधिकारिक भाषा अर्थात राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और इसी ऐतिहासिक घटना के सम्मानार्थ प्रतिवर्ष दि.14 सितंबर को संपूर्ण भारत में हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है । इस दिवस की महत्ता को ध्यान में रखते हुए मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने अपने संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में प्रतिबद्ध रहते हुए दिनांक 14 सितंबर, 2023 से दिनांक 28 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा 2023 का आयोजन किया, जिसमें पत्तन अधिकारियों व कर्मचारियों, तालुका स्तरीय स्कूली छात्रों और केंद्र सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/बैंकों के कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताओं /गतिविधियों का आयोजन किया गया ।

पूणे, महाराष्ट्र में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर दि. 14 सितंबर को हिंदी दिवस का शुभारंभ हुआ । इसी के साथ मुरगांव पत्तन प्राधिकरण में भी श्री गुरुप्रसाद राय, उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा समारोह का शुभारंभ हुआ मुरगांव पत्तन के सभी विभागाध्यक्ष, अधिकारी/ कर्मचारी बोर्ड रूम में उद्घाटन सत्र में उपस्थित रहे। इस अवसर पर, उपाध्यक्ष महोदय, पत्तन के सभी विभागाध्यक्ष और अधिकारियों /कर्मचारियों की उपस्थिति में श्री अमित शाह, माननीय गृह मंत्री तथा श्री. श्रीपाद नाईक, माननीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग राज्य मंत्री के संदेश पढ़े गए। श्री गुरुप्रसाद राय तत्समयी उपाध्यक्ष, ने इस अवसर पर शुभकामनाएं देते हुए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह किया कि राजभाषा के रूप में संविधान निर्माताओं द्वारा हिंदी को दिए गए महत्व के पीछे के दृष्टिकोण को समझें और हिंदी में अपने दिन-प्रतिदिन के सरकारी कार्य स्वरुचि से करें । हिंदी में बोलने और लिखने का ईमानदार प्रयास करें ।

दिनांक 14.09.2023 को हिंदी दिवस के अवसर पर मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस, के हिंदी दिवस संदेश को एमपीए कॉर्पोरेट वेबसाइट पर होस्ट किया गया ।

पत्तन के सभी विभागों में भी सामूहिक रूप से हिंदी दिवस संदेश पढ़े गए।

दि. 14.09.2023 को पत्तन अधिकारियों व कर्मचारियों तथा सीआईएसएफ और आरएओ पदाधिकारियों के लिए सामान्य हिंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दि. 15.09.2023 को पत्तन पदाधिकारियों के लिए सामान्य हिंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दि.15-09-2023 को सीएसआर के तहत हिंदी प्रचार-प्रसार गतिविधि के रूप में संजय स्पेशल स्कूल व आशादीप स्कूल के स्पेशल बच्चों के लिए मेरा भारत महान विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 15 सितंबर, 2023 को मुरगांव तालुका स्तरीय सेकंडरी स्कूल के छात्रों के लिए ऑनलाइन हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निबंध का विषय था - भारत के भविष्य में छात्रों का योगदान।

इसी भांति नराकास, द. गोवा के तत्वावधान में मुरगांव पत्तन प्राधिकरण द्वारा नराकास, द. गोवा के अंतर्गत केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों व बैंकों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दि. 18 सितंबर, 2023 को काव्यांजलि नामक मौलिक हिंदी काव्य रचना प्रतियोगिता (ऑनलाइन) का आयोजन किया गया।

दिनांक 21 सितंबर, 2023 को सतर्कता, यातायात और सामान्य प्रशासन विभाग के लिए राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मार्गदर्शन सत्र का आयोजन किया गया।

दि. 21-09-2023 को पतन के उप सचिव/समकक्ष एवं उनसे उच्च स्तर के अधिकारियों के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता (ऑनलाइन) का आयोजन किया गया ।

दिनांक 22 सितंबर, 2023 को सिविल इंजीनियरी, यांत्रिक इंजीनियरी, समुद्री और वित्त विभागों के लिए राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मार्गदर्शन सत्र का आयोजन किया गया।

दिनांक 22 सितंबर, 2023 को चिकित्सा विभाग के लिए
राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मार्गदर्शन सत्र का आयोजन किया गया।

दिनांक 25 सितंबर, 2023 को पत्तन पदाधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन)), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय कथित कार्यशाला की संकाय सदस्य थी। पत्तन के लगभग 30 पदाधिकारियों ने उक्त कार्यशाला में भाग लिया।

दि. 25 सितंबर, 2023 को पत्तन पदाधिकारियों के लिए हिंदी टिप्पण व मसौदा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दि. 27/09/2023 को मुरगांव तालुका स्थित हायर सेकंडरी स्कूल के छात्रों के लिए हिंदी भाषा का महत्व विषय पर जागरूकता कार्यक्रम

हिंदी पखवाड़ा, 2023 का समापन कार्यक्रम का आयोजन

डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस अध्यक्ष, एमपीए की अध्यक्षता में तथा श्री. जी. पी. राय, तत्समयी उपाध्यक्ष तथा सभी विभागाध्यक्ष और अधिकारियों व कर्मचारियों तथा मुरगांव तालुका स्थित छात्रों व शिक्षक वर्ग की उपस्थिति में दि. 04-10-2023 को पूर्वाह्न 11:00 बजे मुरगांव पत्तन अतिथि गृह के कांफ्रेंस हॉल में हिंदी पखवाड़ा, 2023 का समापन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इंजीनियरी यांत्रिक विभाग को राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु पतन की राजभाषा रोलिंग शील्ड 2022-23 प्रदान की गई।

इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण किया गया। 10 वीं व 12 वीं बोर्ड परीक्षाओं में हिंदी विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले दीपविहार सेकेंडरी व हायर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों को इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर पत्तन की हिंदी पत्रिका गोंय पोर्ट दर्पण के सातवें अंक (ई- पत्रिका) का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया।

मुरगांव पत्तन में राजभाषा कार्यान्वयन की झलकियां

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सतत प्रयासरत है। इन लक्ष्यों की प्रगति की समीक्षा हेतु मुरगांव पत्तन के अध्यक्ष की अध्यक्षता में तथा उपाध्यक्ष एवं सभी विभागाध्यक्षों एवं सभी विभागों के संबंधित राजभाषा संपर्क अधिकारियों की उपस्थिति में पत्तन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित अंतराल पर आयोजित की जाती हैं। इन बैठकों में हिंदी में कार्यालयीन कार्यों को बढ़ावा देने, राजभाषा के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों के समाधान और विभागीय स्तर पर हिंदी के अधिकतम उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए विचार-विमर्श किया जाता है।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण के संयोजन में संपन्न नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की झलकियां

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में वरिष्ठतम अधिकारियों के लिए 'कंठस्थ-2.0' पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन

पत्तन अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

विभागों में हिंदी कार्य की समीक्षा

मुरगांव पत्तन में आयोजित विभिन्न गतिविधियां - एक नजर

सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2023 की प्रस्तावना के रूप में, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) ने निवारक सतर्कता और शासन पर केंद्रित प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन किया ।

एमपीए ने क्रूज सुविधा के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए दि. 15.9.23 को क्रूज हितधारकों के लिए क्रूज जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

पीपीपी मोड पर एमपीए में अंतर्राष्ट्रीय और देशी क्रूज टर्मिनल और फेरी टर्मिनल के संचालन और अनुरक्षण के लिए डॉ. विनोदकुमार, आईपीओएस, अध्यक्ष एमपीए और श्री शिवचंद्र शेट्टी, निदेशक, गोवा आईसीटी प्राइवेट लिमिटेड द्वारा उपाध्यक्ष,एमपीए और विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में कन्सेशन करार पर दि. 21.09.23 को हस्ताक्षर किए गए।

क्रूज सीजन का पहला देशी जहाज मेसर्स कॉर्डेलिया का एम.वी एम्प्रेस दि. 22.09.2023 को मुरगांव पत्तन में पहुंचा, जिसमें कुल 218 यात्री और 572 चालक दल के सदस्य सवार थे ।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) ने पर्यावरण संबंधी दायित्व को बढ़ावा देने के लिए दि. 29.09.23 और दि. 12.10.23 के बीच कई स्वच्छता पहल कार्यों का आयोजन किया।

दीपविहार स्कूल के छात्रों द्वारा एकल-उपयोग प्लास्टिक को कम करने के लिए हस्त निर्मित कपड़े के थैलों का वितरण

एमपीए ने सी व्यू रोड, वास्को सिटी और पत्तन आवासीय क्षेत्रों जैसे प्रमुख स्थानों पर सफाई अभियान चलाया, जिसमें वरिष्ठ अधिकारियों, कर्मचारियों, सीआईएसएफ कर्मियों, स्थानीय निवासियों और छात्रों की सक्रिय भागीदारी रही। दि. 02.10.23 को मुरगांव पत्तन में महात्मा गांधी जी की 154वीं जयंती मनाई और अध्यक्ष डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस के नेतृत्व में स्वच्छता शपथ ली गई ।

मुरगांव पत्तन ने दि. 04.10.23 से दि. 06.10.23 तक गोवा सरकार द्वारा आयोजित विज़न गोवा प्रदर्शनी में भाग लिया।

दि. 17.10.23 से दि. 19.10.23 तक आयोजित ग्लोबल मैरीटाइम इंडिया समिट **(GMIS)** 2023 में अध्यक्ष डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस के नेतृत्व में मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) के अधिकारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस, अध्यक्ष एमपीए द्वारा पीपीपी आधार पर बर्थ संख्या 10 और 11 के संचालन और अनुरक्षण के संबंध में दि. 27.10.2023 को डेल्टा इंफ्रालॉजिस्टिक्स (वर्ल्डवाइड) लिमिटेड को लेटर ऑफ अवार्ड (एलओए) प्रदान किया गया।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) ने दि. 30.10.23 से दि. 05.11.23 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023 मनाया, जिसका विषय था भ्रष्टाचार का विरोध करें; राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें । अध्यक्ष डॉ. एन. विनोदकुमार ने उद्घाटन समारोह के दौरान सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई, जिसमें तत्समयी उपाध्यक्ष, सीवीओ, सभी विभागाध्यक्ष और कर्मचारियों ने भाग लिया। सीआईएसएफ यूनिट ने भी श्री उप कमांडेंट कुलदीप भगत के नेतृत्व में शपथ ली।

दि. 02.11.23 को साइबर स्वच्छता और सुरक्षा तथा वित्तीय जागरूकता पर जागरूकता सत्र आयोजित किए गए, जिसमें एमपीए कर्मचारियों और सीआईएसएफ कर्मियों ने भाग लिया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समापन समारोह

एम.वी. अगस्त ओल्डेनडॉर्फ दि. 31.10.23 को एमपीए घाट सं. 5 पर आया । एमपीए द्वारा हाल ही में शुरू की गई हरित श्रेय योजना के तहत, हरित पहल को बढ़ावा देने वाले जहाजों को पुरस्कृत करने के लिए, डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस अध्यक्ष एमपीए ने विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में जहाज के मास्टर कैप्टन मार्सिन प्रोचनिकी को सम्मानित किया और इसके साथ ही एमपीए अपनी हरित श्रेय योजना के तहत पर्यावरण की दृष्टि से संवहनीय नौवहन को प्रोत्साहित करने वाला भारत का पहला पत्तन बन गया।

दिनांक 17.11.23 को एमपीए के विभिन्न विभागों में राष्ट्रीय एकता शपथ ली गई।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण में संविधान में निहित मूल्यों को बनाए रखने हेतु संविधान दिवस मनाया गया।

तेल रिसाव पर वार्षिक क्षेत्र स्तरीय प्रदूषण प्रतिक्रिया अभ्यास/प्रशिक्षण

एमपीए ने दि. 05.12.23 को सीजन में पहली बार एक साथ 3 क्रूज जहाजों यथा एम.वी. वास्को द. गामा, एम. वी. मारेला डिस्कवरी और एम. वी कोस्टा सेरेना की मेजबानी की और उन्हें घाट पर रखा । इनमें कुल 4158 यात्री और 2159 चालक दल के सदस्य थे।

दि. 06.12.23 को डॉ. प्रमोद सावंत, माननीय मुख्यमंत्री, जीईडीए के अध्यक्ष और डॉ. एन. विनोद कुमार, आईपीओएस, अध्यक्ष एमपीए और उपाध्यक्ष की उपस्थिति में 3 मेगावाट पी ग्राउंड माउंटेड सौर ऊर्जा संयंत्र के निष्पादन के लिए एमपीए और गोवा ऊर्जा विकास एजेंसी (जीईडीए) के बीच समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

दि. 14.12.23 को मुरगांव पत्तन प्राधिकरण और मेसर्स डेल्टा पोर्ट्स मुरगांव टर्मिनल प्राइवेट लिमिटेड के बीच मुरगांव पत्तन में पीपीपी आधार पर घाट सं. 10 और 11 का प्रचालन और अनुरक्षण परियोजना के लिए 30 वर्ष की अवधि के लिए कन्सेशन करार पर हस्ताक्षर किए गए।

नव वर्ष 2024 के स्वागत के लिए मुरगांव पत्तन प्राधिकरण में केक कटिंग समारोह का आयोजन

कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) पहल के भाग के रूप में, एमपीए द्वारा मुरगांव तालुका क्षेत्र के 24 हाई स्कूल/हायर सेकेंडरी स्कूलों में सीएसई पर्यावरण शैक्षिक प्रकाशन/पुस्तकों का वितरण किया। डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस अध्यक्ष/एमपीए ने पत्तन द्वारा संचालित दीपविहार हायर सेकंडरी स्कूल की प्रिंसिपल को किताबें भेंट कीं।

एमपीए के अध्यक्ष डॉ. एन. विनोदकुमार ने 33वें अखिल भारतीय महा पत्तन शतरंज टूर्नामेंट का उद्घाटन किया, जिसकी मेजबानी मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) ने की। इसमें नौ महा पत्तनों ने भाग लिया। टूर्नामेंट का समापन दि. 18.01.24 को हुआ, जिसमें माननीय पत्तन, पोत परिवहन, और जलमार्ग और पर्यटन राज्य मंत्री श्री श्रीपाद नाईक जी मुख्य अतिथि थे। एमपीए ने टीम ट्रॉफी जीती, मुंबई पत्तन प्राधिकरण ने दूसरा और चेन्नई पत्तन प्राधिकरण ने तीसरा स्थान हासिल किया।

दि. 26.01.2024 को मुरगांव पत्तन में 75वें गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान, एमपीए के उपाध्यक्ष श्री गुरुप्रसाद राय ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, औपचारिक परेड का निरीक्षण कर सलामी ली और उपस्थित लोगों को संबोधित किया। इस कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी, एमपीए कर्मचारी, उनके परिवार, पत्तन प्रयोक्ता, शिक्षक और छात्र वर्ग शामिल थे। समारोह में सीआईएसएफ कर्मियों को उनके समर्पित कार्य के लिए सम्मानित किया गया, दीपविहार स्कूल के छात्रों और पत्तन कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया और सीआईएसएफ कर्मियों द्वारा हथियार चलाने का कौशल प्रदर्शन किया गया।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने हेडलैण्ड सडा के दीपविहार माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में जागरूकता सत्र आयोजित किया गया । इस पहल कार्य का उद्देश्य मुरगांव पत्तन की विभिन्न गतिविधियों के बारे में छात्रों की समझ को बढ़ाया जा सके ।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण की आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) टीम ने दि. 22 फरवरी, 2024 को "कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम" शीर्षक पर एक जागरूकता सत्र आयोजित किया।

एनआईसीडीसी लॉजिस्टिक्स डेटा सर्विसेज ने एमपीए के सहयोग से दि. 23.02.2024 को एमपीए के एचआरडी सेंटर, हेडलैण्ड सडा में लॉजिस्टिक्स डेटा बैंक (एलडीबी) और यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफेस प्लेटफॉर्म (यूएलआईपी) कार्यशाला का आयोजन किया।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) में दि. 04.03.24 से 11.03.24 तक सुरक्षा सप्ताह मनाया गया।

महिला कक्ष/एमपीए द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2024 का आयोजन

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने भारतीय डाक विभाग के सहयोग से दि. 12.03.2024 को भारतीय डाक योजनाओं और आधार कार्ड अद्यतनीकरण पर एक दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया।

दि. 02.04.2024 को एमपीए के मुरगांव पत्तन इंस्टिट्यूट ने गोवा मेडिकल कॉलेज (जीएमसी) के सहयोजन से एक अत्यंत सफल रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

दि. 15 अप्रैल 2024 को, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) ने अपना 139वां वार्षिक स्थापना दिवस मनाया, जिसमें पेंशनभोगियों और पत्तन कर्मचारियों को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया और एमपीए के बारे में एक वृत्तचित्र दिखाया गया। अध्यक्ष डॉ. एन. विनोदकुमार, आईपीओएस मुख्य अतिथि थे, जबकि तत्समयी उपाध्यक्ष श्री जी.पी. राय सम्मानित अतिथि थे। समारोह का समापन पत्तन कर्मचारियों के सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा हुआ।

'विभागीय जांच प्रक्रिया' पर एमपीए अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण सत्र

दि. 15-16 मई 2024 को, मुरगांव पत्तन प्राधिकरण ने भारतीय तटरक्षक और स्थानीय एजेंसियों जैसे हितधारकों के सहयोग से अपना वार्षिक तेल रिसाव प्रदूषण प्रतिक्रिया अभ्यास आयोजित किया, जिसका उद्देश्य तेल रिसाव प्रतिक्रिया उपकरणों के व्यावहारिक प्रदर्शनों के साथ कार्गो हैंडलिंग के दौरान समन्वय को बढ़ाना और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना था।

दि. 21 मई, 2024 को मुरगांव पत्तन प्राधिकरण में आतंकवाद विरोधी दिवस कार्यक्रम का आयोजन

दि. 03.06.2024 को सतत हरित ऊर्जा और तेल रिसाव प्रतिक्रिया के संबंध में ऑस्ट्रेलियाई स्वामित्व वाली कंपनी- सस्टेनेबल ऑयल रिकवरी एंड रीमेडिएशन (एसओआरआर) द्वारा प्रस्तुति

दि. 5 जून, 2024 को एम.पी.ए. में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। पत्तन के अस्पताल परिसर में अनार, आंवला, अमरूद और नींबू सहित विभिन्न फलदार पौधे लगाए गए। इस कार्यक्रम में तत्समयी उपाध्यक्ष (प्रभारी) श्री सतीश होन्नाक्कटे के साथ-साथ विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी और पत्तन के कर्मचारी शामिल हुए।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण (एमपीए) अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2024 के उपलक्ष्य में विविध योग कार्यक्रमों का आयोजन।

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के निर्देशों के अनुपालन में, एमपीए द्वारा 04.07.2024 से पत्तन अधिकारियों के लिए एमएस ऑफिस में बैच-वार प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन ।

दिनांक 04.07.2024 को एम.पी.ए. के महिला कक्ष द्वारा वन महोत्सव के उपलक्ष्य में पौधा प्रदर्शनी का आयोजन ।

एमपीए के मैकेनिकल इंजीनियरिंग, सिविल इंजीनियरिंग और वित्त विभागों के अंतर्गत बिट्स पिलानी इंटर्न के पीएस-I छात्रों द्वारा प्रस्तुति सत्र

दि. 19.07.2024 को याचिका समिति (राज्यसभा) का अध्ययन दौरा।

मुरगांव पत्तन में स्वतंत्रता दिवस समारोह 2024

मुरगांव पत्तन द्वारा 23.08.24 को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के उपलक्ष्य में दीपविहार सेकंडरी स्कूल व हायर सेकंडरी स्कूल के छात्रों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता तथा "अंतरिक्ष अन्वेषण" विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया ।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह (V-W) की पूर्ववर्ती गतिविधियों के भाग के रूप में दि. 22.08.24 और दि. 23.08.24 को विभागीय जांच पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुरगांव पत्तन प्राधिकरण द्वारा कोंकण रेलवे के सहयोजन से रेलवे डिवीजन, यातायात विभाग के कर्मचारियों के लिए रेलवे प्रचालन पर दि. 26.08.24 से दि. 28.08.24 तक 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन ।

हिंदी है हमारी शान,
राष्ट्र की भाषा, जन की पहचान।
शब्दों में इसकी मिठास,
हर दिल में जगाती विश्वास।

शब्द-शब्द हैं मोती इसके,
संस्कृति की है गहराई।
ग्रामों से लेकर नगरों तक,
फैलाती अपनी परछाई।

हीरक जयंती का ये पर्व,
सजीव करता गौरवगाथा।
हिंदी ने जो मार्ग दिखाया,
वो है हमारी असली विधाता।

साहित्य इसका अनुपम धरोहर,
गीत, ग़ज़ल, और कहानियाँ।
हिंदी ने जो बंधन बांधा,
वो जोड़ता है दिल की कड़ियाँ।

आओ मिलकर दीप जलाएँ,
हिंदी का मान बढ़ाएँ।
हीरक जयंती के इस पर्व पर,
हिंदी के रंग हर ओर सजाएँ।

सदियों तक अमर रहे ये,
विश्व में गूँजे इसकी बानी।
राष्ट्रभाषा के इस यशगान से,
सजाएँ हिंदी की कहानी।

MPA
मुरगांव पत्तन प्राधिकरण

आईएसओ 9001–2015,
आईएसओ 14001–2015 तथा
आईएसपीएस अनुपालक पत्तन